प्राकृत ग्रन्थमाला - 14

विमलसूरि विरचित

पउमचरियं

(पद्मचरितम्)

प्रथम भाग

संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद सहित

प्रधान-सम्पादक
प्रो. परमेश्वर नारायण शास्त्री
कुलपति

सम्पादन, संस्कृतच्छाया व अनुवाद
डॉ. प्रभात कुमार दास
आचार्य, पीएच.डी.

पालि-प्राकृत योजना
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानितविश्वविद्यालय)
जनकपुरी, नई दिल्ली

प्रस्तावना

समग्र भारतीय वाङ्मय में काव्य के रूप में 'रामायण' से अधिक लोकप्रियता किसी भी काव्य को नहीं मिली है। कई हजारों वर्षों से यह भारत एवं विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त करने के साथ-साथ भारतीयों के अखण्ड धरोहर के रूप में स्थान प्राप्त किया है। यह केवल कल्पना के आधार पर नहीं अपितु सत्य घटना के आधार पर एक वंश के इतिहास होते हुए भी लोक में प्रतिष्ठित है। यही करण है कि इस देश को मर्यादित स्वरूप में चलाने के लिए शिक्षकों से लेकर हर माता-पिता, महापुरुष, इतिहासवित् तथा विविध मतावलम्बियों के धर्मगुरुओं ने भी इस काव्य से प्राप्त शिक्षा के आधार पर स्वयं जीवन जीने से लेकर अपनी परवर्ती पीढ़ी को भी इसी का ज्ञान देते आये हैं। परिणामत: इस ग्रन्थ की सत्यता लोगों में आचरण के रूप में स्थिर रह कर प्रति व्यक्ति में जीवित है।

उस ख्यातयश राम की कथा अग्नि, गरुड़ आदि पुराणों में भी यथावत् पाई जाती है। इतना ही नहीं इस राम कथा की सुदीर्घ विश्व-परिक्रमा भी विविध देशों से प्राप्त परम्पराओं में निहित कथाओं के आधार को खोजने पर मिलता है।

सनातन परम्परा में यह राम कथा जैसे प्रसिद्ध रही वैसे भारत में जन्में अन्य दो परम्पराओं यथा – बौद्ध मतावलम्बियों में 'दशरथ जातक' नाम से तथा जैन मतावलम्बियों में विमलसूरि विरचित 'पउमचरियं', रविषेण कृत 'पद्म-पुराण', गुणभद्र का 'उत्तर-पुराण' तथा हेमचन्द्र का 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित' भी प्रसिद्ध हैं।

वाल्मीकि रामायण सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं में अनूदित होने के साथ-साथ जर्मनी, अंग्रेजी एवं फ्रेंच आदि विदेशी भाषाओं में भी अनूदित हुआ है। यह रामायण जावा, चीन तथा अन्य उपद्वीपों में न केवल पाया जाता है अपितु तदनुरूप आचरण भी वहाँ की संस्कृति में फैला हुआ है।

जैन परम्परा के अनुसार 63 शलाकापुरुषों में से तीन महापुरुष प्रसिद्धि प्राप्त किये हैं, यथा – राम, लक्ष्मण तथा रावण; जिन्हें बलदेव, वासुदेव तथा प्रतिवासुदेव का रूप ही माना जाता है। ईसा की तृतीय शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी तक राम को आधार बनाकर लिखे गये अनेकों कृतियों के नाम तथा समय निम्नानुसार है –

1. पउमचरिय -विमलसूरि (तीसरी सदी)
2. वसुदेवहिण्डी - संघदास (609 ईस्वी से पहले)

दट्ठूण दाणविभवं, जडाउणो नियमलद्धमाहप्पं।
नागरहारोहं चिय, संबुक्कविवायणं चेव॥73॥
केगइपुत्तागमणं, खरदूसणविग्गहं परमघोरं।
सीयाहरणनिमित्तं, सोगं चिय रामदेवस्स॥74॥
सिग्घं विराहियस्स य, आगमणं दूसणस्स य वहं च।
रयणजडिविज्जनासं, सुग्गीवसमागमं चेव॥75॥
साहसगइस्स य वहं, सीयापडिवत्तिकारणं लम्भं।
मिलणं विहीसणेणं, विज्जाबलकेसिसंपत्ती॥76॥
तह कुम्भयण्ण-इन्दइभुयङ्गपासेसु बन्धणं परमं।
लक्खणसत्तिपहारं, तह य विसल्लागमं चेव॥77॥
दहमुहपवेसणं चिय, भवणं जिणसन्तिसामिनाहस्स।
तह पाडिहेरगमणं, लङ्काएँ पवेसणं चेव॥78॥

दृष्ट्वा दानविभवं, जटायोः नियमलब्धमाहात्म्यम्।
नागरथारोहणमेव, शंबूकविनाशनं चैव॥73॥
कैकेयीपुत्रागमनं, खरदूषणविग्रहः परमघोरः।
सीताहरणनिमित्तः, शोकश्चैव रामदेवस्य॥74॥
शीघ्रं विराधितस्य चागमनं दूषणस्य च वधश्च।
रत्नजटीविद्यानाशः, सुग्रीवसमागमश्चैव॥75॥
साहसगतेश्च वधः, सीताप्रतिपत्तिकारणस्य लम्भः।
मिलनं विभीषणेन, विद्याबलकेशीसंप्राप्तिः॥76॥
तथा कुम्भकर्ण-इन्द्रजिखुजङ्गपाशेषु बन्धनं परमम्।
लक्ष्मणशक्तिप्रहारः, तथा च विशल्यागमश्च॥77॥
दशमुखप्रवेशनमेव, भवनं जिनशान्तिस्वामिनाथस्य।
तथा प्रातिहार्यगमनं, लङ्कायां प्रवेशनं चैव॥78॥

---

111. दान का वैभव देखकर जटायु का नियम ग्रहण करना और उससे उसकी महत्ता का बढ़ना, 112. नागरथ पर चढ़ना और शंबूक का वध॥73॥ 113. कैकेयी के पुत्र भरत का आगमन, 114. खरदूषण के साथ अतिघोर संग्राम, 115. सीता के अपहरण के कारण राम का शोक॥74॥ 116. विराधित का शीघ्र आना, 117. दूषणवध, 118. रत्नजटी की विद्याओं का नाश, 119. सुग्रीव के साथ समागम॥75॥ 120. साहसगति का वध, 121. सीता कहाँ पर हैं इसका समाचार मिलना, 122. विभीषण का मिलन, 123. विद्याबल एवं केशी की प्राप्ति॥76॥ 124. कुम्भकर्ण एवं इन्द्रजीत का नागपाश में जकड़ा जाना, 125. लक्ष्मण पर शक्ति का प्रहार तथा विशल्या का आगमन,॥77॥ 126. जिनेश्वर श्री शान्तिनाथ के मन्दिर में रावण का प्रवेश, 127. वहाँ अष्ट प्रातिहार्यों की रचना, 128. रावण का लंका में प्रवेश॥78॥

पालि एवं प्राकृत योजना के अन्तर्गत
प्रकाशित प्राकृत ग्रन्थों की सूची

1. प्राकृत साहित्य और भारतीय परम्पराएँ (लेख संग्रह)
2. प्राकृत भाषा और व्याकरण के विविध आयाम (लेख संग्रह)
3. आख्यानमणिकोशः (हिन्दी अनुवाद)
4. नाट्यशास्त्र में प्राकृत-सन्दर्भ (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
5. किरियासारो (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
6. णाणसारो (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
7. कसायपाहुडसुत्तं (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
8. रयणसारो (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
9. प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में प्रतिपादित दार्शनिक मीमांसा
10. भारतीय दर्शन और साहित्य के विकास में प्राकृत वाङ्मय का योगदान (लेख संग्रह)
11. UNIVERSAL VALUES OF PRAKRIT TEXTS (लेख संग्रह)
12. भगवदी आराहणा (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
13. गणिविज्जा सुत्तं (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
14. गाहारयणकोसो (संस्कृतच्छाया एवं हिन्दी अनुवाद)
15. दंसणकहरयणकरंडु, प्रथम भाग (हिन्दी अनुवाद)
16. मागधी प्राकृत की विभाषाएँ
17. मागधी प्राकृत के प्राचीनतम अभिलेख एवं मागधी प्राकृत-संस्कृत-हिन्दी कोश
18. मध्यकालीन मागधी प्राकृत व्याकरण एवं सन्दर्भ

पालि-प्राकृत योजना
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
(मानितविश्वविद्यालय)
56-57 सांस्थानिक क्षेत्र, जनकपुरी, नई दिल्ली - 110058
ईमेल - rskspp2009@gmail.com, फोन - 011-28520979, फैक्स- 011-28520976

978-93-85791-36-9